विचार बिन्दु

कलियुग में रहना है या सतयुग में यह तुम स्वयं चुनो, तुम्हारा युग तुम्हारे पास है। –विनोबा

आरक्षण का भूत

आरक्षण को लेकर छोटे-बड़े आन्दोलन व अदालतों में कानूनी लड़ाई चलती ही रहती है। कई बार एक अदालत का निर्णय दूसरी अदालत से भिन्न होते है, जो फिर नई कानूनी जंग की शुरुआत कर देते है। देश नें मंडल आयोग की सफिरिशों के आंशिक रूप से लागू किए जाने के बाद हिंसक आंदोलन देखा। राजस्थान में भी मूल ओबीसी, सामाजिक न्याय, समता व अन्य नामों के बैनर्स के नीचे आंदोलन हुए। गुर्जरों के आरक्षण हेतु आंदोलन की यादें तो सभी को होगी जो पहले ST वर्ग में शामिल होना चाहते थे और फिर OBC से अलग निश्चित कोटा चाहते थे।

एस सी, एस टी वर्ग को संविधान के जरिए बहुत पहले से विधायिकाओं और सरकारी नोकरियों में आरक्षण मिला हुआ है। इस के सम्बंध में कानून कायदे की स्थिति स्पष्ट व स्थापित हो चुकी किन्तु ओबीसी, वर्ग के लिए अदालती फैसले व सरकारी नोटिफिकेशन्स की स्थिति राजनेताओं व उच्च अधिकारी वर्ग की अच्छी-बुरी नियत, आश्वासनों के अनुसार बदलती रही है।

अभी हाल ही में जो OBC युवाओं का एक दिवसीय धरना-प्रदर्शन हुआ, उसका कारण भूतपूर्व सैनिकों के आरक्षण को व रोस्टर रजिस्टर को गलत ढंग से क्रियान्वित करने को माना जा रहा है।

सरकार नें भूतपूर्व सैनिकों के लिए सरकारी भर्तियों में 12 प्रतिशत आरक्षण किया है। इसके क्रियान्वयन के लिए जारी प्रक्रिया में यह व्यवस्था कर दी कि चयनित भूतपूर्व सैनिक जिस जातीय वर्ग का है उसे उस वर्ग के लिए कुल आरक्षित कोटे में गिना जाएगा।

यह सर्व विदित है कि राजस्थान में सेना में मुख्यतः जाट, गुर्जर, यादव, राजपूत, कायमखानी जातियों के लोग ही ज्यादा जाते है। ओबीसी वर्ग के जितने भूतपूर्व सैनिक चयनित हो जाते हैं उतनी भर्तियों की संख्या आरक्षित 21 प्रतिशत में से घटा कर, शेष भर्तियों पर ही आरक्षित वर्ग के युवक, युवतियों को लाभ मिलता है अर्थात यदि किसी पद की 100 भर्ती हों तो उन में से OBC की 21 वैसीकेन्सी होंगी और जाट, यादव, आदि के भूत पूर्व सैनिक में से 10 चयनित हो गए तो शेष ओबीसी युवाओं के लिए 11 ही वैकेंसी रहेंगी। इस वर्ग के नए युवाओं के लिए रिक्तियां बहुत कम हो जाती है।

निर्णय तो सारी स्थितियों को देख कर सरकार को लेना है किंतु यदि सरकार शुद्ध मन से इसका समाधान चाहती है तो इन सुझाव पर भी विचार करे:–

(1.0) आरक्षण की समस्या का सही व स्थाई समाधान तो जातीय जन गणना करवा कर SC, ST, OBC की जनसँख्यानुसार आरक्षण कर दे। 50% की आरक्षण सीमा भी समाप्त सी ही है, इसलिए कोई बाधा भी नही होनी चाहिए। कोई माने या न माने, जातीय पहचान, भारतीय समाज की वास्तविकता है।

जातीय जनगणना देश हित में होगी या लोगों का एक वर्ग इसे देश के लिए अहितकारी कह कर फिर से नए आंदोलनों की शुरुआत करेंगा,जैसा कि मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करने के बाद हुआ था–यह भविष्य के गर्भ में होगा।

(2.0) जिस प्रकार से SC, ST, OBC को एक अलग वर्ग मान कर कर आरक्षण दिया गया है, उसी प्रकार भूतपूर्व सैनिकों, परित्यकता महिलाओं आदि को अलग वर्ग में माने और आरक्षण क्रियान्वित करें। भूतपूर्व सैनिकों को आरक्षण, उनकी देश के लिए समर्पित सेवा के आधार पर दिया जाता है न कि उनका जाट, यादव, गुर्जर, राजपूत आदि जातियों के होने के कारण दिया जाता है। इसी प्रकार परित्यक्ता महिलाओं, विशेष योग्यजनों आदि को आरक्षण उनको किसी जाति विशेष का होने कारण नहीं होकर उनकी विशेष कठिनाइयों के कारण दिया जाता है।

आरक्षण की समस्या का सही व स्थाई समाधान तो जातीय जन गणना करवा कर SC, ST, OBC की जनसँख्यानुसार आरक्षण कर दे। 50% की आरक्षण सीमा भी समाप्त सी ही है, इसलिए कोई बाधा भी नही होनी चाहिए। कोई माने या न माने, जातीय पहचान, भारतीय समाज की वास्तविकता है।

(3.0) इसे कैसे-कैसे क्रियान्वित किया जा सकता है, उसे निम्न उदाहरणों से समझा जा सकता है :–

मान लें कि LDC पदों के लिए 100 रिक्तियां है। इनको वर्ग वार विभाजित करने का एक तरीका यह हो सकता है:–

(3.1) भूत पूर्व सैनिकों के लिए आरक्षित होंगी 12 और अन्य विशेष समूहों के लिए आरक्षित पदों को 100 में से घटाकर शेष रिक्तियों को SC, ST, OBC, GEN इत्यादि ग्रुप्स में आरक्षित कोटे के अनुसार विभाजित करें।

(3.2) यदि केवल भूतपूर्व सैनिकों तक इसे सीमित रखा जाए तो, अन्य वर्गों के लिए शेष रिक्तियां 100–12=88 को SC, ST, OBC, GEN वर्गों में आरक्षण प्रतिशत के अनुसार विभाजित करें और इनके लिए क्रमशः 13, 11, 18, 46 पद आरक्षित होंगे।

अन्य विशेष वर्गों यथा EWS, विशेष योग्य जन, परित्यक्ता महिला आदि का भी का कोटा 100 आरक्षण कोटा भी इसी प्रकार 100 में से घटा कर शेष पदों का विभाजन SC, ST, OBC, GEN में किया जा सकता है।

(3.3) रिक्तियों के विभाजन का दूसरा तरीका यह भी हो सकता है:– पहले प्रतियोगिता परीक्षा हो और फिर चयनित सूची के अनुसार जो भूतपूर्व सैनिक जिस जाती/वर्ग का हो,उतनी रिक्तियां उस वर्ग के लिए आरक्षित कुल पदों में से घटा दें। उदाहरण के लिए यदि SC, ST, OBC, GEN के क्रमशः 2, 2, 2 व 6 (कुल 12) भूत पूर्व सैनिक चयनित हो रहे हैं तो फिर अन्य SC, ST, OBC, GEN के लिए रिक्तियां हो जाएंगी--15–2=13,12–2=10, 21–6=15, 50–2=48।

अन्य वर्गों के लिए आरक्षित पदों की गणना भी उपरोक्त दोनों प्रकार की जा सकती है।

रोस्टर रजिस्टर संधारण में एक बहुत बड़ी विसंगतिया चल रही है, यह भी OBC युवकों का आरोप रहा है।

सरकारी नौकरी में भर्ती किए गए प्रत्येक कर्मचारी- अधिकारी का रोस्टर रजिस्टर में इंद्राज होता है कि उसकी भर्ती किस पद के विरुद्ध हुई अर्थात उसकी भर्ती SC, ST, OBC, EWC इत्यादि कटेग्रिज में से किस कैटेगरी में हुई है।

आरोप यह भी है कि रोस्टर रजिस्टर में आरक्षण लागू होने से पहले वाले, बिना आरक्षण का लाभ लिए चयनितों को भी ओबीसी में गिन कर ओबीसी का 21% से अधिक प्रतिनिधित्व पूर्ण दिखाकर नई भर्तियों में ओबीसी के पद कम करवाने की बात भी युवाओं के द्वारा कही जा रही है।

युवाओं का कहना है कि 21% की गणना में OBC आरक्षण लागू होने से पहले के पदों को शामिल कर गणना करना असंवैधानिक है क्योंकि उस समय जिनका चयन हुआ तो उन्हें कोई लाभ आरक्षण का नहीं मिला था और वे सामान्य कटेगरी में कम्पीट करके मेरिट से आए थे।

युवाओं के अनुसार, इस कारण कई विभागों की भर्तियों की अधिसूचनाओं में ओबीसी के 21% पद भी नही दिखाए जाते हैं। हो सकता है किसी विभाग में ऐसा इरादतन या नासमझी के कारण हुआ हो, इसलिए सरकार के लिए यह उचित होगा कि इसकी उच्च स्तरीय निष्पक्ष जांच व सतत समीक्षा होती रहनी चाहिए न कि केवल विभागों पर छोड़ दिया जाए।

सरकार को चाहिए कि समय रहते, बिना पूर्व धारणाओं के इस समस्या पर विचार करे। जातीय पूर्वाग्रहों से मुक्त निष्पक्ष वरिष्ठ अधिकारियों से समस्या का परीक्षण करवाए औऱ शीघ्र निर्णय ले।

**–अतिथि सम्पादक,
महावीर सिंह,
आई.ए.एस. (से.नि.)**

राशिफल गुरूवार 6 अक्टूबर, 2022

पंडित अनिल शर्मा

आश्विनी मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2079, धनिष्ठा नक्षत्र सांय 7:42 तक, शूल योग रात्रि 2:20 तक, विष्टि करण प्रातः 9:41 तक, चन्द्रमा प्रातः 8:28 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-मकर, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-कन्या, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज भद्रा प्रातः 9:41 तक रहेगी। आज पापाकुशा एकादशी व्रत, भरत मिलाप और पंचक प्रातः 8:28 से आरम्भ होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:53 तक, चर 10:47 से 12:15 तक, लाभ-अमृत 12:15 से 3:10 तक, शुभ 4:37 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:25, सूर्यास्त 6:05

मेष

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

वृष

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में वार्ता सफल रहेगी। नवीन व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

कर्क

अपनी कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यक्तिगत परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा।

सिंह

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कन्या

आर्थिक मामलों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से और योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में महत्वपूर्ण परामर्श मिल सकता है। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

वृश्चिक

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

धनु

मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद-अनबन दूर होने लगेगी। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों में परिचितों से सहयोग मिलेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मीन

अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखने का प्रयास करें।

चाय मुक्त भारत

थोड़ा रूकिये ना। चाय पीकर जाइये। ऐसी भी क्या जल्दी है। आये है तो चाय लेनी ही होगी। घर हो या बाहर, मीटिंग से पहले और मीटिंग के बाद चाय की उपस्थिति को सभी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया है। गरीब हो या अमीर, ग्रामीण हो या शहरी सम्पूर्ण राष्ट्र चाय के रस में डूबा हुआ है। हमारे हर समारोह की शोभा बन चुकी है। हालात यहाँ तक पहुँच गये है कि यदि आप घर आये मेहमान का चाय से स्वागत करना भूल गये है तो स्वयं मेहमान की प्रतिक्रिया होगी- अरे भाई उनके घर गये थे, चाय तक की भी नहीं पूछा।

आज तो मेरे देश में सुबह उठते ही प्रभु से पहले चाय को याद किया जाता है। चाय तो जैसे मंदिर के प्रसाद से भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो गयी है। घर हो या कार्यालय, न्यायालय हो या संतों का आश्रम, कॉलेज हो या हॉस्पीटल चारों ओर जनता चाय की चुस्कियाँ लेने में व्यस्त है। फालतू आदमी को टाइम पास करने के लिए चाय चाहिये और व्यस्त व्यक्ति को रिलेक्स होने के लिए चाय की याद आती है।

समय के साथ चाय में अनेक तरह के उतार-चढ़ाव आ रहे है। मीठी चाय, फीकी चाय, मसाले वाली चाय, बिना दूध की चाय, लेमन टी, ग्रीन टी, ब्लैक टी आदि पता नहीं कितने तरह की चाय बाजार में धडल्ले से बिक रही है। आपकी चाय की पसन्द से समाज यह विभाजन कर देता है कि आप सामान्य आदमी है या बड़े व्यक्ति। प्रायः मीठी और दूध वाली चाय पीने वालों को सामान्य श्रेणी में रखा जाता है। लेमन टी, ग्रीन टी, फीकी चाय पीने वालों को थोड़ा बड़ा आदमी माना जाता है। चाय जिस क्रोकरी में प्रदान की जा रही है, उसका भी बड़ा महत्व हो गया है। चाय वही है, क्रोकरी की क्वालिटी से रेट घटती-बढ़ती है।

चाय के प्रति उमड़ते प्रेम की यह गाथा उस देश की है, जहाँ आज से मात्र 50-60 साल पहले चाय के दर्शन ही दुर्लभ थे। चाय के प्रति कोई लगाव एवं सम्मान नहीं था। मूलतः यह अंग्रेजों का ही पेय माना जाता था। वहाँ के ठण्डे वातावरण में इसकी उपयोगिता समझ में आती है। मेरे स्कूल जीवन में हम मित्र लोग कभी-कभार घर वालों से छिप कर ही रेस्टोरेन्ट में चाय पीने जाते थे। आखिर फिर ऐसा क्या घटनाक्रम हुआ कि छोटे से कालखण्ड में चाय हमारे जैसे गर्म देश में लोकप्रियता के शिखर पर पहुँच गयी है।

चाय बैंचने वाली कम्पनियों ने मार्केटिंग की अपनी अद्भूत कला से देशवासियों को चाय के रस में डूबों दिया। ब्रुक बॉण्ड टी कम्पनी ने 60-70 वर्ष पूर्व विभिन्न शहरों में मुख्य चौराहों पर अपने चाय के थैले लगाये। आने-जाने वाले लोगों को आवाज लगाकर फ्री में चाय पीने के लिए आग्रह

डॉ. कैलाश सोडाणी

करते थे। लोग रूकने लगे, फ्री की चाय का मजा लेने लगे। चाय पीने के बाद बेचने वाला पूछता था, चाय कैसी लगी? निःशुल्क चाय की तारीफ करना भी पीने वाले की मजबूरी होती थी। जैसे ही आपने चाय की तारीफ की, वह 50 ग्राम चाय की पुड़िया आपको सप्रेम भेंट कर देता था और कहता था परिवार के सदस्यों को भी यह आनन्द प्रदान कीजिये। देश में चाय घर-घर तक पहुँच गयी। प्रारम्भ में निःशुल्क चाय से हमारी आदत बनाई गयी फिर एक दिन अचानक यह निःशुल्क स्कीम बन्द हो जाती है और हम खरीदने के लिए विवश हो गये। विवश ही नहीं गुलाम हो गये। याद रखना एक दिन यही स्थिति वाट्सअप, फेसबुक, ट्वीटर में आने वाली है। टी कम्पनियों के षड़यंत्र के

■ **मेरे देश में सुबह उठते ही प्रभु से पहले चाय को याद किया जाता है। चाय मंदिर के प्रसाद से भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो गयी है**

साथ-साथ अंग्रेजों का पेय होना हमारी गुलाम मानसिकता में प्रतिष्ठा का विषय भी था। इसलिए धीरे-धीरे हम दिन में दो-चार-पांच चाय रोब के साथ पीने लगे।

बात केवल स्वास्थ्य और पैसों की नहीं है अपितु हम सभी दिन भर में चाय के नाम पर समय कितना खराब कर रहे है। समय अमूल्य है। ईश्वर ने समय के रूप में हमें बहुत बड़ा खजाना दिया है। खजाने का उपयोग एवं दुरूपयोग स्वयं पर निर्भर है। फिर हम सभी देशवासी समय जैसे कीमती उपहार को चाय की चुस्कियों में क्यों खराब कर रहे है ? सोचना होगा, समझना होगा और समय, स्वास्थ्य और पैसों के दुरूपयोग को रोकना होगा। जिस मार्केटिंग स्ट्रेटेजी से विदेशी कम्पनियां अपना प्रोडक्ट हमें खरीदने के लिए मजबूर कर देती है वैसे ही हमें भी देश में सोशल मीडिया के माध्यम से ऐसा वातावरण एवं मानसिकता बनानी होगी कि लोग स्वतः कोल्डड्रिंक की भाँति चाय से भी दूरी बनायेंगे। देश में स्वदेशी सोच एवं चिंतन की मार्केटिंग करनी होगी।

चाय के साथ-साथ आज हमें पिज़्ज़ा और बर्गर से भी सावधान रहना होगा। इन्ही विदेशी कम्पनियों ने अपने मार्केटिंग के खेल से भारतीय प्रोडक्ट- कचोरी, समोसा, इडली आदि को पुरानी एवं कमजोर मानसिकता का सूचक बना दिया। महंगे पिज़्ज़ा और बर्गर को सम्मान के ऊँचे पायदान पर बिठा दिया। विदेशी कम्पनियाँ तो केवल हमारी जेब से पैसा निकालने के लिए समाज में खाने-पीने के मानदण्ड बदलती रहती है। उन्हे हमारे समय और स्वास्थ्य की चिन्ता नहीं है। सचेत और सावधान तो स्वयं को रहना होगा। क्या खाना और क्या पीना है, निर्णय हमारा अपना है। कोई हमें मजबूर नहीं कर रहा है।

चाय मुक्त भारत की शुरूवाद सरकारी कार्यालय एवं समारोह से करनी चाहिये फिर विवाह आदि कार्यक्रमों में चाय की उपलब्धता बन्द करनी होगी। अन्ततः देश में एक वातावरण बनेगा और एक दिन हमारे कीमती समय, स्वास्थ्य एवं पैसे की बर्बादी रूकेगी।

**डॉ. कैलाश सोडाणी,
पूर्व कुलपति,
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर**

ओपन ग्रैण्ड मास्टर्स चैस टूर्नामैंट में भीलवाड़ा के अभिजीत सबसे आगे

बीकानेर, (कासं)। चल रहे इंटरनेशनल ओपन ग्रांड मास्टर्स चैस टूर्नामेंट में पंद्रह देशों के तीन सौ से ज्यादा खिलाड़ी हिस्सा ले रहे हैं। खास बात ये है कि यहां भीलवाड़ा के अभिजीत गुप्ता अब तक सबसे आगे बने हुए हैं। तीस लाख रुपए के इस इनामी मुकाबले में अभिजीत दुनिया के टॉप प्लेयर्स को एक के बाद एक हार का स्वाद चखा रहा है। कैटेगरी ए में राजस्थान के ग्रांड मास्टर अभिजीत गुप्ता ने ईरान के तहबाज अर्श को हराकर एकल बढ़त बना ली है। इससे पहले अभिजीत ने यहां खेल रहे अन्य ग्रांड मास्टर्स को भी हराया। इस टूर्नामेंट में टॉप रेटेड अभिजीत अपने वर्ग में जीत के प्रबल दावेदार बन चुके हैं। रूस के जीएम बोरिस और जॉर्जिया के ग्रांड मास्टर पन्टसुलिआ लेमन ने ड्रा खेला। मंगोलिया के बचुलून और ओमिदी आर्या (ईरान) ने ड्रा खेला। दीपन चक्रवर्ती, आराध्या, अनुज श्रीवर्ती, राम अरविन्द, जितदिनोव (यूएसए) और कुशाग्र मोहन सभी के खेल बराबरी पर रहे।

प्रतियोगिता निदेशक एसएल हर्ष ने बताया कि कैटेगरी बी में तमिलनाडु के दिनेश कुमार ने बिहार के मोहित सोनी को हराकर एकल बढ़त बना ली। कदव ओमकार और पोटलुरी सुप्रिया के खेल ड्रा रहे। किशोर कुमार और अजय बिरवानी का खेल भी ड्रा रहा जबकि निर्गुण केवल (महाराष्ट्र) ने राजस्थान के भरत बंसल को और रमनदीप सिंह गिल ने दिल्ली के शुभम को हराया। इस आयोजन में बीकानेर के कई नन्हें खिलाड़ियों को भी खेलने का अवसर मिला है। इनमें कुछ खिलाड़ी अपना मैच जीत गए हैं। इससे खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फीडे रेंक मिलने की उम्मीद बन गई है। बड़े खिलाड़ियों के साथ मोहरे लड़ाने का अवसर भी मिल रहा है।

गंगाशहर के आशीर्वाद भवन में दो कैटेगरी में 157 बिसात पर 314 शातिर अपने दाव-पेच खेलते हैं। राजस्थान शतरंज संघ द्वारा बीकानेर में प्रथम अंतरराष्ट्रीय ओपन ग्रांड मास्टर्स प्रतियोगिता में आयोजन से जुड़े विनोद बाफना, बाफना अकादमी के सीइओ डॉ. पीएस वोहरा, ऋषभ सेठिया व जय सेठिया भी खिलाडियों का उत्साहवर्धन करने पहुंचे। इस आयोजन में नगर विकास न्यास के पूर्व चैयरमेन और राजस्थान शतरंज संघ के अध्यक्ष महावीर रांका ने बताया कि देश और दुनिया के इतने बड़े खिलाड़ी बीकानेर में आना शहर के लिए गौरव का विषय है।

किसान ने बेटी को किडनी देकर बचाई जान

माया देवी

चंदगीराम

कोटपूतली, (निसं)। ग्राम पूतली निवासी एक 65 वर्षिय बुजुर्ग किसान ने पुत्री के जीवन पर आये खतरे को देखकर अपनी स्वयं की जान की बाजी लगाते हुए बेटी की जान बचाई ।

ग्राम पूतली निवासी नत्थुराम गुर्जर ने बताया कि उनकी बहन माया देवी (40) का विवाह अलवर जिले की थानागाजी तहसील निवासी गाँव हींसला निवासी छुट्टन लाल गुर्जर के साथ हुआ था। ग्रामीण परिवेश के खेतीहर परिवार में रहने वाली उनकी बहन माया की दोनों किडनियां खराब हो जाने से उनके जीवन पर खतरा मंडरा रहा था। इस पर चिकित्सकों ने किडनी ट्रांसप्लांट की बात कही। परिवार में केवल उनके 65 वर्षिय बुजुर्ग पिता चंदगीराम की किडनी ही अपनी पुत्री से मिलान खा रही थी लेकिन पिता की ज्यादा उम्र देखते हुए चिकित्सक किडनी ट्रांसप्लांट से कतरा रहे थे किन्तू चंदगीराम ने एक कदम आगे बढते हुए अपने जीवन की परवाह ना कर अपनी एक किडनी देकर बेटी के जीवन को बचा लिया ।

जयपुर के महात्मा गाँधी अस्पताल में नैफ्रोलॉजी विभाग के विशेषज्ञ चिकित्सक डॉ. सूरज गोदारा के नेतृत्व में चिकित्सकों की टीम ने लगभग 8 घण्टे तक चले ऑपरेशन में सफलतापूर्वक किडनी का ट्रांसप्लांट किया। ऑपरेशन के बाद दोनों पिता-पुत्री की स्थिति सामान्य है। उनके भाई नत्थूराम ने बताया कि बहन की जान बच जाने से पूरा परिवार राहत महसूस कर रहा है।

विदेशी पर्यटक ने बनाया राक्षस का रूप

पुष्कर, (निसं)। पुष्कर में रावण दहन हुआ। विदेशी पर्यटक भी इस दौरान राक्षस का रूप बनाकर आया। विदेशी का यह रूप लोगों में रहा चर्चा का विषय रहा। पुष्कर में बांगड़ स्कूल के पास छोटी बस्ती की ओर से श्री ब्रह्म पुष्कर सेवा संघ की ओर से रावण दहन किया गया। बड़ी बस्ती में मेला मैदान में रावण दहन किया गया। इस दौरान पुष्कर के विधायक सुरेश सिंह रावत, पुष्कर नगरपालिका के अध्यक्ष कमल पाठक, उपाध्यक्ष शिव स्वरूप महर्षि व पार्षद मौजूद रहे। रावण दहन देखने के लिए सैकड़ों की तादात में विदेशी पर्यटक भी मौजूद रहे।

■ **पुष्कर में दशहरा मेले में रावण दहन हुआ**

हिन्दी साहित्य के निर्माता-जन्म शताब्दी पर विशेष

कालजयी रचनाकार-डॉ. रांगेय राघव

हिन्दी साहित्य के महान पुरोधा डॉ. रांगेय राघव (पूरा नाम तिरूमलै नम्बाकम वीर राघव-आचार्य) का जन्म 17 जनवरी 1923 को पिता रंगाचार्य एवं माता कनकवल्ली के घर, बाग मुजफ्फर, आगरा (उत्तरप्रदेश) में हुआ था। इस वर्ष उनकी जन्मशताब्दी मनायी जा रही है। रांगेय राघव के माता-पिता दोनों तमिल, फारसी व संस्कृत के विद्वान थे। पिता अंग्रेजों के विरुद्ध क्रान्तीकारी विचारों के प्रचार -प्रसार एवं गतिविधियाँ करने पर बारह वर्ष के लिए देश निकाला दिया था। तब वह आगरा में जाकर रहने लगे।

पिता रंगाचार्य संस्कृत के उद्भट विद्वान होने से तत्कालीन जयपुर नरेश द्वारा स्थापित वैर के सीताराम मंदिर का पुरोहित बनाया था। उन्होंने 1944 में हिन्दी से एम.ए. किया था। लगभग 18 वर्ष की आयु में स्नातक अध्ययन के दौरान ही उन्होंने अपना पहला उपन्यास 'घरौंदा' लिखा, जो 1946 में प्रकाशित हुआ, जो बाद में चर्चित एवं लोकप्रिय हुआ। स्नातकोत्तर की डिग्री के बाद उन्होंने 'गोरखनाथ और उनका युग' विषय पर 1949 में डाक्टरेट की उपाधि मिली थी। घरौंदा के प्रकाशन के बाद वह समर्पित भाव से निरन्तर लिखते रहे। उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं में अपने को कम अवधि में ही प्रतिष्ठित कर लिया और उपन्यास, कहानी, आत्मकथा, संस्मरण, काव्य, नाटक, आलोचना, चिन्तर एवं दर्शन के अलावा अनुवाद के क्षेत्र में डेढ सौ से अधिक कृतियाँ लिखी।

सन् 1943-44 में बंगाल के अकाल और ग्वालियर के गोलीकांड पर आपने रिपोर्ताज लिखे एवं अकाल तथा महामारी की तबाही पर 'तूफानों के बीच' उपन्यास लिखा जिसे खूब प्रसिद्धि मिली। इन्होंने 'निर्माण' नामक पत्रिका का भी सम्पादन किया, जिसमें विचारोत्तक तथा क्रान्तीकारी लेख छापते थे। डॉ. राघव की प्रतिभा बहुमुखी थी। केवल 39 वर्ष की आयु में ही आपने सैंकडों ग्रन्थ रच

यादराम सिंह यादव

डाले थे। वह प्रगतिशील-जनवादी विचारधारा के सशक्त लेखक थे। सम्पन्न परिवार में जन्म लेकर भी लेखन ही उनकी जीविका का मुख्य साधन बना रहा। वह वर्तमान में जीने पर विश्वास करते थे। 7 मई, 1956 को सुलोचना आयंगार से विवाह किया। एक पुत्री सीमंतिनी का 1960 में जन्म हुआ। अधिकांश जीवन आगरा, वैर व जयपुर में व्यतीत किया था।

डॉ. रांगेय राघव मानवता के एक सशक्त चितेरे थे वे हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, ब्रज तथा तमिल के विद्वान होने के साथ सिद्धहस्त चित्रकार भी थे। आपने संस्कृत भाषा में मृच्छकटिका एवं मुद्राराक्षस जैसे नाटकों का हिन्दी में सफल अनुवाद किया था। अंग्रेजी भाषा के सेक्सपीयर के नाटक गाल्जवर्दी, शैले, कीटस, गेट आदि जर्मन व फ्रांसीसी महान कवि व लेखकों के काव्य एवं प्रमुख कहानीकारों की कथाओं का हिन्दी में अनुवाद किया था। 'गदल' इनकी सिरमौर कहानी है, जिसकी बेबाकी, मजबूती और कर्मठता में 'गदल' जैसी अन्य स्त्री नजर नहीं आती। विविध सामाजिक समस्याओं का चित्रण आपकी कहानियों की मुख्य विशेषता रही है।

आपके 'मेघावी' नामक प्रथम काव्य को हिन्दुस्तानी अकादमी प्रयाग, अधूरा किला 'कब तक पुकारूं' को

उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा 'मेरी प्रिय कहानियां' को राजस्थान साहित्य अकादमी ने पुरस्कृत किया था। महात्मा गांधी पुरस्कार 1966 में 'मरणोपरान्त' प्रदान कर सम्मानित किया गया। उन्होंने देश को, हिन्दी की महान सृजनशीलता के दर्शन कराये। रिपोर्ताज लेखन, जीवन चरितात्मक उपन्यास और महामाया-गाथा 'दो खण्डों में' की नयी परम्परा डाली।

डॉ. रांगेय राघव को हिन्दी साहित्य का सेक्सपीयर माना जाता है जबकि मूलतः तमिल थे। उनके अधिकतर ऐतिहासिक उपन्यास उन चरित्रों से जुडी हुयी महापुरूषों, भगवानों व महिलाओं के नाम पर लिखे गये हैं। जैसे भारती का सपूत-भारतेंदु हरिशचन्द्र की जीवन पर आधारित 'लखिया की आंखे'-कवि विद्यापति के जीवन पर, रत्ना की बात-तुलसी के जीवन पर, देवकी का बेटा-कृष्ण के जीवन पर आधारित है।

उन्होंने सेक्सपीयर के सभी 10 नाटकों का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद किया था, जो मूल रचना सरीखे थे। उन्होंने कहानी, कविता, आलोचना, नाटक, संस्मरण, यात्रा वृतान्त के अलावा सभ्यता व संस्कृति, समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, अनुवाद, चित्रकारी शोध और व्याख्या के क्षेत्र में 150 से अधिक पुस्तकें-रचनाऐं लिखी।

सहयोगी उपन्यासों में 'बारह खम्भा' और 'ग्यारह सपनों का देश' के साझे लेखक रहे। उनकी 'प्रमुख कहानियों में देवदासी, तूफानों के बीच, अय्यास मुर्दे, अंगारे ना बुझे, इन्सान पैदा हुआ, साम्राज्य का वैभव, समुद्र के फैन, पांच गधे, मेरी प्रिय कहानिया आदि कहानी संग्रह प्रमुख हैं।

'आलोचनात्मक ग्रन्थों' में 'गोरखनाथ एवं उनका युग' आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और श्रृंगार, भारतीय पुनर्जागरण की भूमिका प्रमुख ग्रंथ हैं।

उनके रचित उपन्यासों में 'कब तक पुकारूं' तथा 'मुर्दों का टीला' पर टी.वी. धारावाहिक बनाये जाकर प्रसारित हो चुके हैं। 'कब तक पुकारूं' उपन्यास के प्रमुख पात्र वैर गांव के करनट 'नट' सुखराम को भारतीय साहित्य की 'कालजयी कृति का अमर पात्र' बना दिया। सुखराम और 'पथ का पाप' के किशनलाल जैसे पात्रों की गंध आज भी उनके गांव की माटी में रची बसी है। अनुवाद विधा में उनकी सिद्धहस्तता की प्रशंसा उपराष्ट्रपति सर्वपल्ली डा. राधा कृष्णन ने की थी, क्योंकि उनकी इच्छानुकूल ही डॉ. राघव ने 'मेघदूत' का अंग्रेजी में भी सचित्र अनुवाद किया था। उनके रेखाचित्र उनके द्वारा अनुदित ग्रंथों, ऋतु संहार, कुमारसंभव और भामिनी विलास में देखे जा सकते हैं। इस कलम के जादूगर की 12 सितम्बर 1962 को कैन्सर से बम्बई में निधन हो गया।

फैजाबाद में उनकी पुण्य स्मृति में एक अकादमी की स्थापना की गयी। आगरा के 'बाग मुजफ्फर' में जहां वे रहते थे, उस क्षेत्र की सड़क का नाम रांगेय राघव रोड़ रखा गया है। राजस्थान साहित्य अकादमी भी उनके नाम से एक वरिष्ठ साहित्यकार को प्रतिवर्ष 'डॉ. रांगेय-राघव पुरस्कार' प्रदान करती है। ऐसे अमर साहित्यकार की जन्मशताब्दी पर निम्न पंक्तियां उनके सम्मान में स्पंदित होती हैं–

तूफानों की रगों पर, थीं बिजलियां चमकती,
मांझी सम्हाल डांडे, बोला जरा ठहर लो।
है कुछ दिनों की गर्दिश, धोखा नहीं है लेकिन,
जो आंधियों ने फिर से, अपना जुनून उभारा।।

**यादराम सिंह यादव,
वरिष्ठ लेखक एवं साहित्यकार**